INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD)
© 2026 IJNRD | Volume 11, Issue 2, February 2026 | ISSN: 2456-4184 | IJNRD.ORG

“कलियुग की मीरा”: आधुनिक युग के संदर्भ में ‘कृष्ण-भक्ति’ के परिवर्तित स्वरूप का पुनर्पाठ एवं भक्ति, स्त्री-चेतना का समकालीन पुनरावलोकन।

(एक सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक एवं नारी चेतना आधारित अध्ययन)

लेखिका: केननक्रांता पटेल

kenankranta@gmail.com

सारांश

भारतीय भक्ति परंपरा में मीराबाई का स्थान अत्यंत विशिष्ट है। उन्होंने अपने आराध्य श्री कृष्ण के प्रति एकनिष्ठ प्रेम और समर्पण का जो आदर्श प्रस्तुत किया, वह आज भी प्रेरणास्रोत है। वर्तमान कलियुग में सामाजिक संरचना, पारिवारिक दायित्व, आर्थिक दबाव तथा तकनीकी परिवेश के कारण भक्ति के रूप में परिवर्तन आया है, परंतु भाव की प्रामाणिकता अब भी जीवित है।

यह शोधपत्र "कलियुग की मीरा" की अवधारणा को ऐतिहासिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक एवं नारीवादी दृष्टिकोण से विश्लेषित करता है। साथ ही, इसमें लेखिका के स्वयं के भावानुभव को भी सम्मिलित किया गया है, जिससे यह शोध केवल अकादमिक नहीं बल्कि अनुभवजन्य भी बनता है।

मुख्य शब्द:

मीरा, कृष्ण भक्ति, आधुनिक नारी, भक्ति आंदोलन, आध्यात्मिक मनोविज्ञान।

प्रस्तावना

भक्ति आंदोलन ने भारतीय समाज में आध्यात्मिक लोकतंत्र की स्थापना की। इस आंदोलन ने जाति, लिंग और वर्ग आधारित भेदभावों को चुनौती दी। मीरा ने न केवल धार्मिक रूढ़ियों का विरोध किया, बल्कि स्त्री की आत्मिक स्वतंत्रता का उद्घोष भी किया।

आज का युग भौतिकता, प्रतिस्पर्धा और मानसिक तनाव से परिपूर्ण है। फिर भी, आंतरिक शांति और प्रेम की खोज मनुष्य की मूल प्रवृत्ति है। आधुनिक स्त्री गृहस्थ जीवन, पेशेवर उत्तरदायित्व और सामाजिक अपेक्षाओं के मध्य संतुलन बनाते हुए भी अंतर्मन में ईश्वर-प्रेम को जीवित रखती है — यही "कलियुग की मीरा" है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. मीरा की पारंपरिक भक्ति का विश्लेषण करना।

2. आधुनिक युग में भक्ति के परिवर्तित स्वरूप का अध्ययन।

3. "कलियुग की मीरा" की मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक प्रासंगिकता का परीक्षण।

4. आधुनिक नारी चेतना के संदर्भ में मीरा के व्यक्तित्व का पुनर्पाठ।

शोध पद्धति

- द्वितीयक स्रोतों (पुस्तक, भजन संग्रह, साहित्य इतिहास) का अध्ययन।
- तुलनात्मक विश्लेषण (मध्यकालीन एवं आधुनिक काल)
- अनुभवजन्य एवं व्याख्यात्मक पद्धति
  सांस्कृतिक-नारीवादी दृष्टिकोण।

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य: मीरा का व्यक्तित्व

मीरा का जन्म राजस्थान के मेड़ता में हुआ। विवाहोपरांत उन्होंने राजसी जीवन को त्यागकर कृष्ण भक्ति को अपनाया।

उनकी प्रसिद्ध पंक्ति —

"मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई"

एकनिष्ठ समर्पण का प्रतीक है।
मीरा की भक्ति में तीन प्रमुख तत्व थे:

- विरह भाव
- पूर्ण समर्पण
- सामाजिक विरोध का साहस।

कलियुग की मीरा: अवधारणा और यथार्थ

कलियुग की मीरा संन्यास नहीं लेती, वह गृहस्थ जीवन में रहते हुए भक्ति करती है।

अ. भक्ति का माध्यम

पूर्वकाल: मंदिर, कीर्तन, साधु-संग

वर्तमान: डिजिटल भजन, ऑनलाइन एवं सत्संग, व्यक्तिगत ध्यान।

ब. संघर्ष का स्वरूप

पूर्वकाल: सामाजिक बहिष्कार

वर्तमान: मानसिक दबाव, पारिवारिक अपेक्षाएँ, आत्म-संदेह।

स.जीवन-दृष्टि

पूर्वकाल: संसार त्याग

वर्तमान: संसार में रहकर आत्मिक संतुलन।

नारी चेतना और मीरा

मीरा ने स्त्री की आध्यात्मिक स्वतंत्रता को स्थापित किया। उन्होंने यह सिद्ध किया कि स्त्री केवल सामाजिक भूमिका तक सीमित नहीं है; उसका आत्मिक अस्तित्व भी है।

आज की स्त्री शिक्षा, रोजगार और परिवार के दायित्वों के मध्य संतुलन स्थापित करते हुए भी अपनी आस्था को जीवित रखती है।

"कलियुग की मीरा" आधुनिक नारी का प्रतीक है — **जो समर्पित भी है और स्वाभिमानी भी।**

मनोवैज्ञानिक आयाम

आधुनिक जीवन में तनाव, अकेलापन और भावनात्मक संघर्ष सामान्य हैं। भक्ति एक "भावनात्मक सहारा" प्रदान करती है।

श्री कृष्ण स्मरण:

१.मानसिक शांति देता है।

२.आत्मविश्वास बढ़ाता है।

३.अकेलेपन को कम करता है।

इस प्रकार, कलियुग की मीरा के लिए भक्ति केवल धार्मिक क्रिया नहीं, बल्कि मानसिक संतुलन का साधन है।

सामाजिक आयाम

आज का समाज स्त्री से बहुआयामी अपेक्षाएँ रखता है। वह कार्यस्थल पर दक्ष हो, घर में जिम्मेदार हो, और सामाजिक रूप से आदर्श भी हो।ऐसी परिस्थिति में आंतरिक आस्था ही उसे स्थिरता प्रदान करती है।कलियुग की मीरा सामाजिक संरचना को तोड़ती नहीं, बल्कि उसमें रहते हुए आत्मिक स्वतंत्रता खोजती है।

तुलनात्मक विश्लेषण

१. **आधार** - जीवन शैली

मध्यकालीन मीरा - विरक्ति

कलियुग की मीरा - संतुलित गृहस्थ जीवन।

२. **आधार** - संघर्ष

मध्यकालीन मीरा - बाह्य विरोध

कलियुग की मीरा- आंतरिक संघर्ष।

३. आधार- भक्ति साधन

मध्यकालीन मीरा- भजन-कीर्तन

कलियुग की मीरा -डिजिटल साधना।

४. **आधार** - सामाजिक दृष्टि

मध्यकालीन मीरा - आध्यात्मिक व सामाजिक बंधनों के विरुद्ध प्रतिरोध

कलियुग की मीरा -संयमित अभिव्यक्ति

लेखिका का आत्मानुभव (प्रामाणिक भाव)

"भक्ति केवल अध्ययन का विषय नहीं, अनुभव का सत्य भी है"।

कभी-कभी जीवन के संघर्षों में जब शब्द साथ नहीं देते, तब मौन प्रार्थना ही शक्ति बनती है।

आधुनिक स्त्री बाहर से दृढ़ दिखती है, पर भीतर वह भी प्रेम और आश्रय चाहती है।

मेरे लिए "कलियुग की मीरा" कोई काल्पनिक चरित्र नहीं, बल्कि वह भाव है जो जिम्मेदारियों के मध्य भी श्री कृष्ण-स्मरण में शांति को प्राप्त करती है।

काव्य अंश (लेखिका द्वारा रचित)

"कलियुग की मीरा"
ना त्यागे मैंने घर आंगन,
ना छोड़ा संसार,
फिर भी मन के मंदिर में,
बसते श्याम मुरारी।

ना वन-वन भटकी पगली बन,
ना विरह में रोई रात,
भीतर-भीतर जपे हृदय में,
श्याम तुम्हारा नाम।

आज की मीरा अदृश्य भक्ति में रहती है,
पर प्रेम वही गहरा है,
कलियुग में भी कृष्ण-स्मरण ही
जीवन का सवेरा है।

ना त्यागा मैंने यह संसार,
ना ओढ़ी विरक्ति की चादर,
फिर भी मन के कोने-कोने में,
बसते हो तुम गिरधर गोपाल।

भीड़ भरे इस कलियुग में,
मन अक्सर तनहा होता है,
तब मीरा सा कोई स्वर भीतर
श्याम नाम ही रोता है।

ना जपमाला, ना वन-वन ध्याना,
ना राणा का दरबार,
बस अंतर्मन में तुम ही तुम हो,
श्री कृष्ण यही मेरा प्रेम , भक्ति ,श्रृंगार एवं आत्मविश्वास।

— श्रीमती केननक्रांता रत्नेश पटेल

निष्कर्ष-

कलियुग की मीरा परंपरा का विस्तार है, कोई आध्यात्मिक व सामाजिक प्रतिरोध नहीं।यह अदृश्य प्रेम भक्ति स्व -इच्छा व स्व -प्रेरणा की भक्ति भाव का स्वरूप में परिवर्तित हुआ है, पर भाव की प्रामाणिकता आज भी वही मध्यकालीन मीरा जैसे ही जीवित है।जो अपने आराध्य श्री कृष्ण की चरणों में प्रेम एवं श्रद्धा के पुष्प समर्पित कर शीश झुकाएं है।

आधुनिक नारी के भीतर जो प्रेम, धैर्य और समर्पण है, वही मीरा की विरासत है।

संदर्भ सूची (प्रामाणिक ग्रंथ)

१. मीरा पदावली, संपादित संस्करण।
हिंदी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल।

२. भक्ति आंदोलन और हिंदी साहित्य, डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी।

३. मीरा बाई की जीवनी, रामकुमार वर्मा।
भारतीय भक्ति आंदोलन, विभिन्न विद्वान।

४. श्री इंद्रेश महाराज की भावविभोर मीरा-कृष्ण प्रेम भक्ति की कथा वाणी जो आत्म-अनुभूति मार्ग प्रशस्त।

Copyright & License:

© Authors retain the copyright of this article. This work is published under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0), permitting unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.